श्रीविद्या-माहात्म्य

जगज्जननी, आदिशक्ति, अखण्ड-ब्रह्माण्ड-नायिका, पराम्बा भगवती महात्रिपुरसुन्दरी के प्रकाश से यह सकल चराचर जगत् प्रकाशित है। दिव्यमयी माँ की इस साधना से साधक के हृदय में अपार शान्ति एवं अपूर्व तेज और ओज का दिव्य समावेश होता है। श्रीचक्र की उपासना एक बड़े महत्त्व का साधन है। रेखागणित के प्रमाण से दैवी शक्तियों का एक प्रतीक स्वरूप यन्त्र "**श्रीयन्त्र**" है। इसकी उपासना के बहि: और अन्तरङ्ग दो भेद हैं। कुण्डलिनी शक्ति के जागरण होने तक ही बहि:पूजा की उपयोगिता होती है। तत्पश्चात् अन्त:साधन प्रारम्भ होता है। श्रीविद्या की बहिरङ्गोपासना श्रीचक्र पर की जाती है और अन्तरङ्गोपासना के लिये देह में ही श्रीचक्र की भावना करने का विधान है। श्रीचक्र का अर्चन-पूजन सब उपासना का कर्मकाण्ड रूपी स्थूल अङ्ग है और शक्ति जागरण के पश्चात् षट्-चक्रवेध की क्रियाओं का योगपरक साधन-धारणा, ध्यान समाधि के अन्तरङ्ग साधनों से युक्त उसका सूक्ष्म अङ्ग है। स्थूल से सूक्ष्म और सूक्ष्म से ही कारण तक पहुँचा जाता है।

ऋग्वेदीय "**बह्वृचोपनिषद्**" में कहा गया है कि "**एकमात्र देवी ही सृष्टि के पूर्व थीं।**" उन्होंने ही ब्रह्माण्ड की सृष्टि की। वे "**कामकला**" के नाम से विख्यात हैं। वे ही शृङ्गारकला कहलाती हैं। उन्हीं से ब्रह्मा उत्पन्न हुये, विष्णु प्रकट हुये, रुद्र प्रादुर्भूत हुये। वे ही अपारशक्ति हैं, वे ही रहस्यरूपा हैं। वे ही प्रणववाक्य-अक्षर-तत्त्व हैं। ॐ अर्थात् सच्चिदानन्दस्वरूपा वे वाणीमात्र में सन्निहित हैं।

उसी उपनिषद् में कहा है "**ऋचाएँ एक अविनाशी परम आकाश में प्रतिष्ठित हैं, जिसमें सारे देवता भलीभाँति निवास करते हैं। उनको जानने का प्रयास जिसने नहीं किया है, वह ऋचाओं के अध्ययन से क्या कर सकता है।**"

शाक्त-सम्प्रदाय के कादि और हादि के आद्यस्वरूप का ज्ञान इसी से उपलब्ध होता है। ललिता और दुर्गा का परब्रह्म के रूप में चिन्तन उपनिषद् में किया गया है। शक्ति के मूल पञ्चदशाक्षरी मन्त्र में "**क**" वर्ण और "**ह**" वर्ण के आदित्व से इन मन्त्रों के स्वरूप बनते हैं। ***श्री विद्या के विषय में श्रीदेवीमाहात्म्य में कहा गया है:-***

विद्या: समस्तास्तव देवि भेदा:, स्त्रिय: समस्ता: सकला जगत्सु। *(मार्कण्डेय दुर्गा१ १/६)*

शाक्त-साधनों में मन्त्र, प्रधान साधन समझा जाता है। मन्त्र की वाचकशक्ति और विमर्शशक्ति-यह शक्ति का मूल रूप है। मन्त्र की वाचक शक्ति "**वाच्य देवता**"

को प्रकाशित करती है और यही है- शाक्त साधना का प्रयोजन। शाक्तमत में भोग और मोक्ष उभय की एकवाक्यता निरूपित की गई है। सांख्य और वेदान्त की तरह त्याग और वैराग्य को महत्त्व नहीं दिया गया है। स्त्री जाति की प्रतिष्ठा और वन्दनीयता के विषय में इस सम्प्रदाय में बड़ा उच्च स्थान है। धर्म-साधना में स्त्री सहायक है, ऐसा इन लोगों का स्पष्ट मन्तव्य है और इसे वे व्यवाहारिक रूप भी देते हैं। वाचक मन्त्र जब वाच्य देवता को स्पष्ट करे तब वह "**विद्या**" नाम धारण करता है। कहा भी है "**विद्या शरीरवत्ता मंत्ररहस्यम्**" (प्रत्यभिज्ञा) अर्थात् विद्यामय शरीरयुक्त होना ही मन्त्र का रहस्य है।

'**मोक्षैक-हेतुः विद्या सा, श्रीविद्या नात्र संशयः**'-श्रीविद्या ही मोक्ष का एकमात्र कारण है यह निःसंदेह है। इस विद्या को जानने वाले लोगों के लिये ही 'विद्वान्' शब्द प्रयुक्त है।

'न शिल्पादि ज्ञान युक्ते, विद्वत - शब्दः प्रयुज्यते,
मोक्षैकहेतु - विद्यावान, स वै विद्वानितीर्यते।
तस्मात् विद्या तु श्रीविद्या, तद् विद् विद्वानितीर्यते ।।'

-शिल्पादि ज्ञानलब्ध व्यक्तियों के लिये विद्वान् शब्द प्रयुक्त नहीं किया जाता; केवल मोक्षप्रदा विद्या का साधक ही यथार्थ विद्वान् है। अतः श्रीविद्या ही ब्रह्मविद्या है। देवियों के बीच में जैसे राजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी ललिता शुद्धादि शुद्ध-परा-विद्या-महाशक्ति हैं वैसे ही मन्त्रों के बीच में उनका मन्त्रराज 'श्रीविद्या' सर्वश्रेष्ठ गुह्यातिगुह्य ब्रह्मविद्या है।

मूल परादेवता अर्थात् शक्तितत्त्व का स्वरूप चिन्मय और आनन्दमय है एवं उस मध्य आनन्दघन चेतन से तीन रेखायें प्रकट होती हैं। मध्य केन्द्र पर बिन्दु का प्रधान देवता कहलाता है और उसमें से जो तीन छोटे बिन्दु प्रकट होते हैं वे ज्ञान, क्रिया और इच्छा के तीन "**अपरबिन्दु**" कहलाते हैं। इस मध्य केन्द्र से बल प्राप्त करके जो कोण बिन्दु होते हैं उनको जोड़ने वाली रेखाओं से सबिन्दु त्रिकोण मुख्य चिदाकाश में प्रकट होता है। वह विमर्शशक्ति का आद्यसूचक यन्त्र है। यथा शाक्त पर बिन्दु का स्वरूपः-

तान्त्रिक, मीमांसक, वैयाकरण एवं योगी, अर्थ एवं शब्द के बीच अनादि प्रकाश्य-प्रकाशक सम्बन्ध मानते हैं। तान्त्रिक सम्प्रदायानुसार देवता का शरीर बीज में से अर्थात् बीजाक्षरों में से प्रकट होता है। पर देवता अर्थात् पर शिव का शक्तिमय स्वरूप परब्रह्म या नादब्रह्म का आश्रय लेकर साधक के चित्त में प्रकट होता है। साधकेच्छित परिणाम उस प्रकटीकरण का साक्ष्य है।

उल्लिखित त्रिकोण में परबिन्दु को शून्य संज्ञा दी जाती है, किन्तु उसका अर्थ शून्य नहीं है। सच्चिदानन्द के वैभव से युक्त मूलतत्व अपनी अन्तर्गता-शक्ति को बाहर निकालने में अभी उद्युक्त नहीं हुआ है, इसी से वह "**शून्य**" **है। यह "शून्य-बिन्दु"** महा-काल की कला से अर्थात् "**अहं**" भाव से विभिन्न होकर उदीयमान भावयुक्त होता है। वही कार्यबिन्दु है और वही "**स्वरूपस्य कलनात्**" काली कहा जाता है। उसी का अन्य नाम "**आद्या**" अथवा "**विद्याराज्ञी**" है, क्योंकि मन्त्रोदय में उसके प्राकट्य का क्रम प्रथम है।

कार्यबिन्दु में से तीन अवान्तर परिणाम प्रकट होते हैं- (१) अपरबिन्दु, (२) नाद, (३) बीज। उसमें अपरबिन्दु चेतनमय है, नाद जड़ाजड़ है, और बीज जड़ है। अपरबिन्दु का दूसरा नाम "**शब्दब्रह्म**" है। उल्लिखित त्रिकोण की उत्पत्ति तीन रेखाओं से हुई है, उसी को "**त्रिपुरबीज**" ऐसा नाम मान्त्रिकों द्वारा दिया गया है।

इन तीन रेखाओं से तीन अवान्तर शक्ति और पुरुषों का आविर्भाव, तीन प्रकार के कर्म, तीन प्रकार की ज्योति और तीन प्रकार के गुण व्यक्त होते हैं और उन पर एक ही पराबिन्दु, पराशक्ति का आध्यक्ष्य है, अतएव वह "**त्रिपुराम्बा**" के नाम से कीर्तित है। कोण को संस्कृत में "**योनि**" कहते हैं। अपने अन्तर्गत वेग को बहिर्गामी करने के समय की उसकी सामर्थ्य को "**शक्ति तत्व**" कहते हैं। इस शक्ति तत्त्व के बीज के साथ प्रणव के सम्बन्ध से या शिवतत्त्वात्मक नाद के क्षोभ से अकारादि वर्ण और उनसे पदों और वाक्यों की रचना सचेतन व्यक्ति द्वारा होती है। इस शाक्त-बीज में से जिन-जिन मन्त्रों की प्राप्तियाँ, उदय के क्रम के अनुसार अनुभवी उपासकों से हुई हैं उन्हीं को तन्त्र सम्प्रदाय में "**दश महाविद्या**" कहते हैं।

इन दश की रचना-व्यवस्था पुनः दो कुलों में की जाती हैं- (१) काली-कुल (२) श्रीकुल। अतएव शाक्त सम्प्रदाय की दृष्टि से "**श्रीयन्त्र**" के दो प्रकार हैं- **(१) कादि विद्यानुसार (२) हादि विद्यानुसार।** (एक तृतीय प्रकार भी है जो "कहादि" विद्या कहा जाता है। इसकी योजना पीछे से की गई है।) "कादि"

विद्या के महामन्त्र का प्रारंभ "**क**" कार से होता है और "**हादि**" का "**ह**" कार से। दोनों विद्याओं में पञ्चदशाक्षर हैं।

कादि विद्या का महामन्त्र यह है- "**क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं**" और हादि विद्या का महामन्त्र है- "**ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं**"।

कादि विद्या के उपासक अगत्स्य ऋषि हैं और हादि विद्या की उपासिका हैं- अगत्स्य मुनि की पत्नी लोपामुद्रा। तान्त्रिक आगमों में "**काम ही परमशिव का नाम है।**"- ऐसा कहा गया है। "**कादि**" विद्या के प्रति श्रद्धान्वित होने वाले आचार्य हैं- श्री परम शिव, दुर्वासा, हयग्रीव (विष्णु) और अगत्स्य। कादि विद्या मुख्य है और हादि गौण।

ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत "**श्री ललिता सहस्रनाम**" की प्रशंसा-प्रसिद्धि तन्त्र साम्प्रदायिक उपासकों में उच्चकोटि की है। "**सौभाग्यभास्कर**" नामक भाष्य के अनुसार-

"**पुंदेवत्यामन्त्राः स्त्रीदेवत्या विद्या इति मंत्रविद्ययोर्लजणभेदोऽप्य स्याः शिवशक्ति सामरस्यरूपत्वादुभयात्मतेजि द्योतनाय मन्त्राणां मध्ये विद्यत्युक्तम् एतदेव देवताध्याने ऐच्छिको विकल्पः स्मर्यते। पुंरूपं वा स्मरेद देवी स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत**" अथवा "**निर्गुणं ध्यायेत्सच्चिदानन्द लक्षणम्। इति मालामन्त्रे ऽपि स्त्रीपुंसभेदेन भेदः। कादिः ककारः आदिर्यस्यां सा कादिः कालीशक्तिः- इति तन्त्रराज प्रसिद्ध कादि नाम शौक्त्य भिन्ना वा।**" अतएव "**कादिसंज्ञा भवेद्रूपा सा शक्तिः सर्वसिद्धये**" इत्यादि। तत्रैव देवी प्रति शिववाक्यम्। सा च "**कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वा-भ्रमिन्द्रः। पुनर्गुहा सकला मायया च पुरुच्यैषा विश्वमातादिविद्यौम्।**" यह मन्त्र अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसका अर्थ है काम (क), योनि (ए), कमला (ई), वज्रपाणि इन्द्र (ल), गुहा (ह्रीं), ह, स वर्ण मातरिश्वा-वायु (क), अभ्र (ह), इन्द्र (ल), पुनः गुहा (ह्रीं)। स, क, ल-वर्ण और माया (ह्रीं) यह (३) सर्वात्मिका जगन्माता की मूल विद्या है और बहुरूपिणी है। शिवशक्त्यभेदरूपा, ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मिका, सरस्वती-लक्ष्मी-गौरीरूपा, अशुद्ध-मिश्र-शुद्धोपासनात्मिका, समरसीभूत शिवशक्त्यात्मक ब्रह्मस्वरूप का निर्विकल्प ज्ञान देने वाली सर्वतत्त्वात्मिका महात्रिपुरसुन्दरी" यह इस मन्त्र का भावार्थ है। यह सब मन्त्रों का मुकुटमणि है और पञ्चदशी "**कादि श्रीविद्या**" के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रीविद्या की साधना से यौगिक शक्ति का अपार अनुभव होता है।

--*--